सिद्धांतों से कुशल प्रबंधन को बढ़ाने पर बल दिया गया। राजनीति और प्रशासन के द्विभाजन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया 1937 में 'ब्रोन लो' समिति ने सिफारिश की कि कार्यपालिका शाखा प्रशासनिक सिद्धांतों को लगाया जाए। लोक प्रशासन ने प्रबंधकीय विज्ञान से बहुत कुछ ग्रहण किया। W.F. विलोबी ने अपनी पुस्तक Principles of Public Administration में 1927 में माना कि सार्वत्रिक उपयोगिता के सिद्धांत कहीं भी प्रयोग किये जा सकते हैं।

Phase - III (1938-1947)

चेस्टर आई. बर्नार्ड ने राजनीति और प्रशासन तथा मूल्य और तथ्य के द्विभाजन को अस्वीकार कर दिया। साइमन ने सिद्धांतों को विरोधाभासी माना। 1939 में अमेरिकन सोसायटी फॉर पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन (ASPA) को लाया गया। व्यावहारिक दृष्टिकोण और कार्यक्रमों की प्रभावशीलता पर बल दिया गया। राजनीति एवं प्रशासन के द्विभाजन को खुली चुनौती दी गई। रॉबर्ट डहाल ने यांत्रिकीय मान्यताओं पर आधारित प्रशासनिक विज्ञान को अस्वीकार कर दिया। ड्वाइड वालडो ने माना कि प्रशासनिक व्यवस्था को राज्य की राजनीतिक व्यवस्था से पूरी तरह अलग नहीं कर सकते।

Phase - IV (1948-1970)

इसे लोक प्रशासन के विषयशास्त्र के लिए एक संकट के चरण के रूप में लेते हैं। व्यवहारवादी प्रभाव बना रहा। राजनीतिक विज्ञान का लोक प्रशासन पर प्रभाव बढ़ा। 1960 में तुलनात्मक प्रशासन समूह को लाया गया। 1962 से फोर्ड फाउण्डेशन ने इस समूह को सहायता दी 1971 में फोर्ड फाउण्डेशन ने इसे सहायता देना बंद कर दिया। 1973 में इसे अमेरिकन सोसायटी फॉर पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन (ASPA) के अन्तर्राष्ट्रीय समिति के साथ मिला दिया गया। 1956 में Administrative Science Quaterly नामक जर्नल को लाया गया। इस चरण में विकास प्रशासन भी आया। 1951 में अन्तर्विश्वविद्यालयी केस अध्ययन पद्धति कार्यक्रम को लाया गया। 1967 में हनी रिपोर्ट आयी और उसी समय फिलाडेल्फिया सम्मेलन का आयोजन किया गया। 1967 में कांग्रेस के चार्टर के द्वारा "नेशनल एकेडमी ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन" को लाया गया। इस चरण में लोक प्रशासन और लोक प्रबंधन के कार्यक्रमों में संपर्क बढ़ा।

Phase V

1970 में National Association of Administration & Public Affairs को लाया गया। इसमें लोक प्रशासन में लोक प्रशासनिक दृष्टिकोण उभरा। राजनीति विज्ञान तथा प्रबंधकीय विज्ञान दोनों के वर्चस्व से बचने का प्रयास किया गया। लोक प्रशासन की जानकारी और व्यवहार को जोड़ने का प्रयास किया गया। मानव अधिकार और मानव संबंध के मुद्दे लिए गए। लोक प्रशासन में मूल्यात्मक सामाजिक दृष्टिकोण बढ़ा।

Phase-VI

1988 में ब्लैकस् बर्ग घोषणा पत्र आया था, उसमें लोक प्रशासन में लोक शब्द का स्थान, भविष्य की संभावनाएँ, संचार या सूचना की जरूरत इत्यादि को लेने पर बल दिया गया था। 1988 में ही दूसरे मिन्नोब्रुक सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस चरण में लोकप्रशासन में राज्य और गैर राज्य भागीदारी के मुद्दे ज्यादा लिए गए हैं। लोकनीति विज्ञान और लोकनीति सक्षमता पर बल दिया गया है। लेकिन साथ-साथ मूल्यात्मक आधार बढ़ा है। नवीन तुलनात्मक लोक प्रशासन के आधार पर तुलनाओं को बढ़ाया गया है। नागरिक उन्मुख सुधार ज्यादा लाए गए हैं। लोक प्रशासन के ऊपर राजनीतिक वैज्ञानिक, लोक प्रशासनिक और लोक प्रबंधन दृष्टिकोणों का मिला-जुला असर है।

जेफरी डी. ग्रीन Jeffrey D. Greene

⇒ ग्रीन के द्वारा लोक प्रशासन के रखे गये विभिन्न चरण:

(I) क्लासिकल Period (1900-1940)

इस चरण में राजनीति और प्रशासन के विभाजन तथा प्रशास के सिद्धांतों पर ज्यादा बल दिया गया। सरकारी प्रशासन के सिद्धांतों आधार पर सक्षमता विकसित करने पर बल था। प्रशासनिक विज्ञान में विकास को लिया गया। लोक प्रशासन में भी वाणिज्य प्रशासन की तकनीकियों को लगाने पर बल दिया गया। आर्थिक अधि पर कर्मियों को प्रेरित करने की कोशिश की गई। औपचारि संगठनों को लिया गया। लोक प्रशासन को विधि से लागू करने से जोड़ा गया। कार्य के विभाजन को जरूरी समझ गया। औपचारिक जवाबदेही पर बल दिया गया।